ईश्वर = God

1. ओम् प्रतिष्ठ। यजुर्वेद 2•13
   ओम् = ईश्वर को अपने हृदय मन्दिर में बैठा लो;
   Let us make God sit in the temple of our heart.
2. ओं क्रतो स्मर। यजुर्वेद 40•15
   हे कर्मशील जीव! तू ओम् = ईश्वर का स्मरण कर।
   O the doer of deeds! Recite and remember the name of God i.e. AUM.
3. श्रदस्मै धत्त। अथर्ववेद 20•34•5
   परमेश्वर के लिए श्रद्धा धारण करो।
   Have deep faith for God.
4. यूयमिन्द्रमवृणीध्वम्। यजुर्वेद 1•13
   हे मनुष्यो! तुम ईश्वर की भक्ति करो–उसको प्राप्त करो।
   O men! You worship that fully accomplished God and realize him
5. इयं ते यज्ञिया तनूः। यजुर्वेद 4•13
   हे मनुष्य! तेरा यह शरीर प्रभु प्राप्ति के लिए है।
   O man! your body is for realization of God.

ईश महिमा = Glory of God

6. ईशावास्यमिदं सर्वम्। यजुर्वेद 40•1
   ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है वह सब ईश्वर से आच्छादित है एवं उसी ने सबको थामा हुआ है।
   What is there in this universe is pervaded and upheld by the almighty Lord.
7. नहि ते अन्तः शवसः। ऋग्वेद 1•54•1

हे प्रभो! आपके बल का अन्त नहीं है।

O the Almighty! Your might knows no bounds.

8. देवो देवानामसि। ऋग्वेद 1•94•13

हे ईश्वर! तू देवों का देव है। अर्थात् आप सबसे महान् हो।

O God! You are the Lord of Lords.

9. न त्वा वाँ अस्ति देवता विदानः। ऋग्वेद 1•165•9

हे ईश्वर! आपके सदृश न कोई देवता=पूज्य है और न कोई विद्वान् है।

O Lord! There is none who is more adorable than you, nor is anyone more learned than you.

10. न त्वामिन्द्राति रिच्यते। ऋग्वेद 8•92•22

हे ऐश्वर्यशाली प्रभो! आपसे श्रेष्ठ कोई भी नहीं।

O The Bounteous Lord. There is no one who is superior to you or can surpass you.

11. स नो बन्धुर्जनिता। यजुर्वेद 32.10

ईश्वर हमारा उत्पादक और बन्धु है।

The God is our creator and closest friend.

12. उत्सो देव हिरण्ययः अथर्ववेद 20.118.2

ईश्वर समस्त सम्पत्ति का झरना है।

God is the fountain head of all riches.

13. इन्द्रो विश्वस्य राजति। यजुर्वेद 36•8

परमेश्वर सारे संसार का शासक और संचालक है।

The Bounteous Lord is the monarch and the motivator of the whole world.

14. विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि। ऋग्वेद 2•23•2

हे प्रभो! सभी विद्याओं का आदिभूत तू ही है।

O Lord! You are the fountainhead of all knowledge.

15. विश्वदेवो महॉ असि। सामवेद 1026

हे ईश्वर! तू महान् है।

O God! You are the greatest of all.

ईश्वर का स्वरूप

16. एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद 1•164•46
एक ईश्वर को विद्वान् लोग अनेक नामों से पुकारते हैं।
The scholars invoke the one God by different names.

17. स एष एक एकवृदेक एव। अथर्ववेद 13•4•20
वह ईश्वर एक है। निश्चय से वह एक ही है।
God is one, surely he is the one, the only one.

18. न तस्य प्रतिमा अस्ति। यजुर्वेद 32•3
उस ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं है।
There is no idol, counterpart or statue of that formless God.

19. य एक इत्तमु ष्टुहि। ऋग्वेद 6•45•16
जो ईश्वर एक ही है उसी की स्तुति करो।
The God who alone is unparalleled, adore him, praise him and none else.

20. एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः। अथर्ववेद 2•2•1
प्रजाओं में एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य और नमस्करणीय है।
O men of the world! in this creation God alone is adorable and worthy of worship.

ईश्वर–समर्पण = Surrender to God

21. त्वमस्माकं तव स्मसि। ऋग्वेद 8•92•32
हे प्रभो! तू हमारा है हम तेरे हैं।

O God! You are our all-in-all and we are your divine children. You are ours and we are yours.

22. तवेद्धि सख्यमस्तृतम्। ऋग्वेद 1•15•5

हे प्रभो! आपकी मित्रता ही अटूट और अमर है।

O Lord! Your friendship is everlasting and divine.

23. देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे। सामवेद 1027

हे ऐश्वर्यशाली प्रभो! विद्वान् लोग आपकी मित्रता के लिए प्रयत्न करते हैं।

O the Bounteous Lord! The wise-men make efforts to win your friendship.

24. मा न इन्द्र परावृणक्। सामवेद 260

हे ऐश्वर्यशाली प्रभो! हमारा त्याग मत करो।

O the Bounteous Lord! Kindly do not forsake us.

25. मा नो अति ख्य आ गहि। सामवेद 1089

हे प्रभो! हमारी उपेक्षा न करो। आओ हमारे हृदय मन्दिर में विराजो।

O Lord! kindly do not neglect us, come and find your abode in our heart.

26. त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते। ऋग्वेद 1•59•1

हे प्रभो! सब भक्त आपमें आनन्द पाते हैं।

O God! The devotes find peace and happiness in you alone.

27. यत्र सोमः सदमित्तत्र भद्रम्। अथर्ववेद 7•18•2

जहां शान्ति की वर्षा करने वाला ईश्वर है वहां सदा ही कल्याण होता है।

Wherever is the divine bestower of peace there is plenty, prosperity and happiness.

28. नेत् त्वा जहानि। अथर्ववेद 13•1•12

हे प्रभो! मैं तुमसे कभी विमुख न होऊं।

O God! I should never forsake you.

मातृ भूमि = Mathor Land

29. माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12•1•12
भूमि मेरी माँ है और मैं उस पृथिवी का पुत्र हूँ।
The wide world is my mother and I am its worthy son.

30. उप सर्प मातरं भूमिम्। ऋग्वेद 10•18•10
मातृ भूमि की सेवा करो।
Serve the mother-land.

31. वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम। अथर्ववेद 12•1•62
हे मातृभूमे! हम तेरे लिए बलिदान करने वाले हो।
O Mother-land! We should sacrifice our lives for you.

राष्ट्र = National

32. वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः। यजुर्वेद 9•23
हम राष्ट्र की रक्षा और उन्नति के लिए सदा जागरूक रहें।
Always we should be vigilant to protect our nation and for its progress.

33. विशि राष्ट्रे जागृहि। अथर्ववेद 13•1•9
हे राजन! तू प्रजा और राष्ट्र में जागरूक रह।
O King! Be vigilant among the subjects and the nation.

34. दिवा नक्तं च जागृताम्। अथर्ववेद 5•30•10
दिन और रात जागरूक बने रहो।
Be vigilant day and night.

35. अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु। सामवेद 1859
हमारे वीर आगे बढें और विजय प्राप्त करो।
Our warriors should march forward and prevail in battle.

36. प्रेता जयता नरः। सामवेद 1862
हे नायको! आगे बढ़ो और विजय प्राप्त करो।

O Heroes! March forward and be victorious.

37. इन्द्र मा स्तेन ईशत। अथर्ववेद 20•127•13

हे ईश्वर! चोर हमारे शासक न हों।

O Lord! Let no thief ever govern or rule over us

परिवार = Family

38. इहैव स्तं मा वियोष्टम्। अथर्ववेद 14•1•22

हे दम्पति! तुम दोनों प्रेम बन्धन में बन्धे हुए सदा साथ रहो कभी अलग मत होवो।

O husband and wife! Be united in the tie of love, never separate from each other.

39. मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षत्। अथर्ववेद 3•30•3

भाई, भाई से द्वेष न करें अर्थात वे एक दूसरे से प्यार करें

A brother should not hate his brother, instead they should love each other.

40. अनुव्रतः पितुः पुत्रः। अथर्ववेद 3•30•2

पुत्र पिता के व्रतों का पालन करने वाला हो।

A son should follow the vows of his father.

41. आ वीरोऽत्र जायताम्। अथर्ववेद 3•23•2

हमारे परिवार में वीर पुत्र उत्पन्न हों।

The heroic child should be born in our families.

42. मदेम शतहिमाः सुवीराः। अथर्ववेद 20•63•3

वीर पुत्रों के साथ हम सौ वर्षों तक आनन्द भोगें।

With heroic sons and grandsons we should live a span of full hundred years.

43. बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश। ऋग्वेद 1•164•32

बहुत सन्तान वाले अत्यधिक कष्ट पाते हैं।

Those who have many children they face much adversity.

44. अन्यो अन्यमभि हर्यत। अथर्ववेद 3•30•1
हे मनुष्यो! परस्पर एक दूसरे से प्रेम करो।
O men! Love each other. Show your affection the one towards the other.

45. अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत। अथर्ववेद 3•30•5
परस्पर मधुर वचन बोलो।
Speak truthful, polite and sweet wards with one another.

संघटन = Union

46. सखायो अनु सं रभध्वम्। यजुर्वेद 17•38
हे मित्रो! मिलकर कार्य करो
O friends! Do your work unitedly.

47. समानी प्रपा। अथर्ववेद 3•30•6
तुम्हारी प्याऊ एक हो।
The place of drinking water should be one and the same for everyone.

48. सहभक्षाः स्याम। अथर्ववेद 6•47•1
हम मिलकर खान–पान करें।
our taking food should be together

49. सं जानीध्वं सं पृच्यध्वम्। अथर्ववेद 6•64•1
एक दूसरे को अच्छे प्रकार जानो और मिल–जुलकर रहों।
Know each other fully well and be together.

50. सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यत। अथर्ववेद 3•30•6
तुम सब मिलकर परमेश्वर की उपासना करो।
All of you should get together to worship God.

51. समानमस्तु वो मनः। ऋग्वेद 10•191•4

तुम्हारे मन एक जैसे हों।

Your mind should be one-well united.

52. सं गच्छध्वम्। ऋग्वेद 10•191•2

तुम सब मिलकर चलो।

All of you should walk together.

53. सं वदध्वम्। ऋग्वेद 10•191•2

तुम सब मिलकर बोलो।

You should speak with one voice.

54. समानी वः आकूतिः। ऋग्वेद 10•191•4

तुम्हारी संकल्पशक्ति एवं जयघोष एक समान हो।

Your intentions and slogan should be similar.

55. समाना हृदयानि वः। ऋग्वेद 10•191•4

तुम्हारे हृदय एक समान हों।

Your mind should be alike.

56. मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम्। अथर्ववेद 6•32•3

परस्पर लड़ने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

Those who fight among themselves become a morsel of death.

पुरुषार्थ = Exertion

57. उत्क्रम महते सौभगाय। यजुर्वेद 11•21

महान् सौभाग्य प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करो।

Work hard for attaining good fortune

58. यन्ति प्रमादमतन्द्राः। अथर्ववेद 20•18•3

पुरुषार्थी लोग परम आनन्द को प्राप्त करते हैं।

Those who are ever-active attain the highest bliss that keeps them in good cheer.

59. महः पार्थिवे सदने यतस्व। ऋग्वेद 1•169•6
इस विशाल संसार में प्रयत्न करो।
In this wide world be industrious.

60. वावृधुः सौभगाय। ऋग्वेद 5•60•5
सौभाग्यशाली बनने के लिए पुरुषार्थ करो।
In order to acquire good fortune, be industrious.

61. न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः। ऋग्वेद 4•33•11
परिश्रम किये बिना देवता किसी के मित्र नहीं बनते।
Without hard work the gods do not become friends.

62. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तम्। ऋग्वेद 8•2•18
देवता पुरुषार्थी को चाहते हैं।
Gods choose the one and love him who is industrious.

63. विश्वे देवास इह वीरयध्वम्। ऋग्वेद 10•128•5
सब बुद्धिमानों को इस संसार में पुरुषार्थ करना चाहिए।
All wise-men must work hard in this world.

64. वीरयध्वं प्र तरता सखायः। अथर्ववेद 12•2•26
हे मित्रो! पुरुषार्थ करो और संसार सागर से पार हो जाओ।
O friends! Be industrious and cross the waters of this world.

कर्म = Action

65. अकर्मा दस्युः। ऋग्वेद 10•22•8
जो अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता वह वह राक्षस के समान है।
He alone is a demon, who does not execute his duties.

66. स्वेन क्रतुना सं वदेत। ऋग्वेद 10•31•2
मनुष्य अपने कार्य से बोले।
A man should speak by his actions.

67. मन्द्रा कृणुध्वम्। ऋग्वेद 10•101•2
हे मनुष्यो! मधुर = अच्छे कर्म करो।
O men! Do good deeds.

68. कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः। अथर्ववेद 7•50•8
कर्म मेरे दायें हाथ में है और जय मेरे बायें हाथ में।
There is action in my right hand and victory in my left hand.

69. कृतꣳ स्मर। यजुर्वेद 40•15
हे मनुष्य! अपने किये हुए कर्मों को स्मरण कर।
O man! Remember the deeds you have done.

70. भद्रं भद्रं क्रतुमस्मासु धेहि। ऋग्वेद 1•123•13
हे प्रभो! श्रेष्ठ सुख और उत्तम कर्मों को हममें धारण कराओ।
O God! Establish us in happiness and good deeds.

71. सखाय क्रतुमिच्छत। ऋग्वेद 8•70•13
हे मित्रो! उत्तम कर्म करने का संकल्प करो।
O friends! Pledge to perform noble deeds.

यज्ञ = Yajna

72. ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम् ऋग्वेद 3.8.8
यज्ञ का ध्वज ऊंचा रखो।
Raise aloft the flag of the yajna.

73. यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। यजुर्वेद 31.16
बुद्धिमान् और विद्वान् यज्ञ के द्वारा ईश्वर की पूजा करते हैं।

The wise and learned men worship god by performing yajna.

74. ब्रह्म यज्ञं च वर्धय। सामवेद 1505
ज्ञान और यज्ञ को बढ़ाओ।
Acquire vast knowledge and spread yajna all over the world.

75. अयज्ञियो हतवर्चा भवति। अथर्ववेद 12.2.37
यज्ञ न करने वाला तेजहीन हो जाता है।
He who does not perform yajna becomes devaid of brilliance.

76. यज्ञध्वं हविषा तना गिरा। ऋग्वेद 2.2.1
शरीर एवं वाणी द्वारा श्रद्धा से यज्ञ करो।
Perform yajna with reverence, body and mind.

77. होतृषदनं हरितं हिरण्ययम्। ऋग्वेद 7.99.1
यज्ञ करने वाले का घर धन धान्य और सन्तानों से हरा भरा रहता है।
Those who perform yajna, their home remain always prosperous with wealth and offsprings.

78. ईजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम्। अथर्ववेद 18•4•2
यज्ञ करने वाले विशेष सुख (स्वर्ग) प्राप्त करते हैं।
Those who perform yajna attain happiness and prosperity.

दान = Donation

79. वि भजा भूरि ते वसु। ऋग्वेद 1•81•6
हे मनुष्य! तेरे पास बहुत धन है, दान कर।
O man! Donate, you have plenty of wealth.

80. दत्तान्मा यूषम्। अथर्ववेद 6•123•4

मैं दान देना कभी न छोड़ूँ।

I should never give up charity.

81. न पापीत्वाय रासीय। अथर्ववेद 20•82•1

मैं पाप कर्म के लिए कभी दान न दूँ।

I should never donate for sinful deeds.

82. भद्रा रातिः। ऋग्वेद 8•19•19

हे परमेश्वर! हमारा दान श्रेष्ठ हो।

O Lord! Our donation should always be of high quality.

83. दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते। ऋग्वेद 1•125•6

दान देने वाले अमर पद प्राप्त करते हैं।

The donors attain the immortal place.

84. उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुः। ऋग्वेद 10•107•2

दानी द्युलोक में परम पद को प्राप्त करते हैं।

The donors attain a prestigious place in the heavens i.e. they get liberation.

85. उत रयिः पृणतो नोप दस्यति। ऋग्वेद 10•117•1

दान देने वाले का धन कभी नहीं घटता।

The wealth of the donor neither diminishes nor is destroyed.

86. दक्षिणावान्प्रथमो हूत एति। ऋग्वेद 10•107•5

दानी सबसे पहले बुलाया जाता है।

The donor’s name is called first of all.

आत्म कल्याण

87. स्वस्ति पन्थामनु चरेम । ऋग्वेद 5•51•15

हम कल्याण के मार्ग पर चलें।

We should follow the path of prosperity and success.

88. शंयोरभि स्रवन्तु नः। ऋग्वेद 10•9•4

हे प्रभो! हमारे ऊपर चारों ओर से सब प्रकार की शान्ति और सुख की वर्षा हो।

O God! Shower upon us from all sides the absolute pleasure and peace.

89. अदीनाः स्याम शरदः शतम्। यजुर्वेद 36•24

हम सौ वर्षों तक स्वाधीन होकर जीवित रहें।

We should live a span of hundred years without being dependent on others.

90. मा प्रगाम पथो वयम्। अथर्ववेद 13•1•59

हम कभी भी उचित मार्ग का त्याग न करें।

We should never go astray from the right path.

91. सोम नो मृड। सामवेद 1318

हे शान्तिदायक प्रभो! हमें सुखी और समृद्ध बनाओ।

The showerer of peace o Lord! Be gracious to us. Make us happy and prosperous

92. मा नो अति ख्य आ गहि। सामवेद 1089

हे प्रभो! हमारी उपेक्षा मत करो; आप सदा हमारे हृदय मन्दिर में विराजमान रहो।

O Lord! kindly do not neglect us, come and find your abode in our heart.

93. शं नो वातः पवताम्। यजुर्वेद 36•10

हे प्रभो! आपकी दया से वायु हमारे लिए शान्ति दायक हो।

O God! May, with your grace, the wind blow bring peace.

94. देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्। यजुर्वेद 25•15

विद्वानों के शुभ एवं कल्याणकारी विचार हमारा मार्गदर्शन करें।

May the auspicious and noble thoughts of the learned people come to us.

95. पाहि माम्। यजुर्वेद 2•6

हे परमेश्वर! मेरी रक्षा करो।

O God! Protect me from all the sides, in every way

96. अहं सूर्य इवाजनि। सामवेद 152

मैं सूर्य के समान ओजस्वी, तेजस्वी, नियमित, गुण ग्राहक और पवित्र हो जाऊँ।

May I, with the grace of God, become vigorous, lustrous, punctual, recipient of good qualities and pure like the sun.

मित्रता = Friendship

97. सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु। अथर्ववेद 19•15•6

सब दिशाओं में रहने वाले प्राणी मेरे मित्र हो जायें।

O gracious God! May all the quarters be our friends i.e. may we have friends everywhere.

98. सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु। अथर्ववेद 7•51•1

मित्र को मित्र की भलाई करनी चाहिए।

A friend should do only good to his friends.

99. देवानां सख्यमुपसेदिमा वयम्। ऋग्वेद 1•89•2

हम सदा विद्वानों से मित्रता करें।

We should always keep the company of the learned persons.

100. शिवा नः सख्या सन्तु भ्रात्राग्ने। ऋग्वेद 4•10•8

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो! भाईयों के साथ हमारी मित्रता कल्याणकारी हो।

O God, the embodiment of knowledge! our friendship with our brothers should be beneficial.

101. मित्रस्य यायां पथा। ऋग्वेद 5•64•3

हम सदा मित्रपन के मार्ग पर चलें।

We should always tread on the path of friendliness.

102. न स सखा यो न ददाति सख्ये। ऋग्वेद 10•117•4

जो आवश्यकता पड़ने पर मित्र की सहायता नहीं करता वह सच्चा मित्र नहीं है।

A friend who does not lend a helping hand to his friend in need is not a friend in reality.

103. यजाम देवान् यदि शक्नवाम्। ऋग्वेद 1•27•13

जहां तक सम्भव हो बुद्धिमान् एवं विद्वानों के संग रहना चाहिए।

We should as far as possible keep the company of wise and learned persons.

104. मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। यजुर्वेद 36.18

हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

May we all view all with Friendly Eyes of love and understanding

अतिथि = Guest

105. एष वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियः। अथर्ववेद 9.6.37

वही अतिथि कहलाता है, जो वेद शास्त्र का विद्वान् है।

The who is well varsed in vedic lore is the honoured guest.

106. अशितावत्यतिथावश्नीयात्; अथर्ववेद 9.6.38

अतिथि के भोजन करने के पश्चात् गृहस्थी को भोजन करना चाहिए।

When the guest has partaken his meals only than the house-holder should take his food. ?

107. अतिथिः शिवो नः। ऋग्वेद 5.1.8

अतिथि हमारे लिए सुखदायक हो।

The guest should be the source of our happiness.

स्वावलम्बन = Self Dependence

108. स्वयं वाजिँस्तन्वं कल्पयस्व। यजुर्वेद 23•15
हे मानव! तू स्वयं अपने शरीर को बलवान् बना।
O Wiseman! You yourself should make your body strong.

109. स्वयं यजस्व। यजुर्वेद 23•15
हे मानव! तू अपना यज्ञ=कार्य स्वयं कर।
O man! Perform your yajna=work yourself.

110. महिमा तेऽन्येन न सन्नशे। यजुर्वेद 23•15
इस प्रकार तेरी महिमा दूसरे नष्ट नहीं कर सकते।
So that your glory can't be destroyed by any one.

111. स्वं महिमानमायजताम्; यजुर्वेद 21.47
अपनी महिमा को बढ़ाओ।
Worship your own majesty. ?

यश = Fame

112. यशः श्रीः श्रयतां मयि। यजुर्वेद 39•4
मुझ में यश एवं ऐश्वर्य दोनों स्थिर रहें।
Fame and riches both should remain firmly in me.

113. यशसः स्याम। अथर्ववेद 6•39•2
हम संसार में यशस्वी बने।
We should win glory in this world.

114. अहमस्मि यशस्तमः। अथर्ववेद 6•39•3
संसार में मैं सबसे अधिक यशस्वी हो जाऊँ।
I should become most famous in the world.

115. मयि वर्चो अथो यशः। अथर्ववेद 6•69•3
तेज और यश दोनों मुझमें हों।
There should be brilliance and glory in me.

बुद्धि = Intelligence

116. दैवीं धियं मनामहे। यजुर्वेद 4•11
हम दिव्य बुद्धियॉ मांगते हैं।
We pray for divine intelligence.

117. अग्ने मेधाविनं कुरु। यजुर्वेद 32•14
हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! मुझे बुद्धिमान् बना दो।
O God, the embodiment of knowledge! Make me highly intelligent.

118. मेधामयासिषम्। यजुर्वेद 32•13
मैं उत्तम बुद्धि प्राप्त करूॅ।
May I attain superior intellect.

119. अहं सुमेधा वर्चस्वी। अथर्ववेद 19•40•2
हे प्रभो। मैं श्रेष्ठ बुद्धिमान् और वर्चस्वी बनूॅ।
O God! With your grace I should ecquir intelligence and brilliance.

120. धिय आ तनुध्वम्। ऋग्वेद 10•101•2
हे मनुष्यो! अपनी बुद्धियों का विस्तार करो।
O Men! Broaden your intellects

ज्ञानी = Learmed

121. अब्रह्मा दस्युः। ऋग्वेद 4•16•9
अज्ञानी दस्यु होता है।

An ignorant person is a demon.

122. समिन्द्र गर्दभं मृण। ऋग्वेद 1•29•5

हे मनुष्य्! मूर्खता को नष्ट कर।

O man! Discard all foolishness.

123. मज्जन्त्यविचेतसः। ऋग्वेद 9•64•21

अज्ञानी संसार सागर में डूब जाते हैं।

Uneducated, perverse minded persons sink and perish in the ocean of the world.

124. सिंहा इव नानदति प्रचेतसः। ऋग्वेद 1•64•8

ज्ञानी सिंहों के समान गर्जता है।

The learned person roars like a lions.

स्वास्थ्य = Health

125. बाहू मे बलमिन्द्रियम्। यजुर्वेद 20•7

मेरी भुजाओं में बल और ऐश्वर्य हो।

There should be power and richness in my arms.

126. अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण। यजुर्वेद 3•17

हे ज्ञानस्वरूप प्रभो! मेरे शरीर की सभी कमियों को दूर करके मुझे स्वस्थ बनाओ।

O God, the form of knowledge! Whatever deficiencies in my body, remove them and make me absolutely healthy.

127. सुवीर्यस्य पतयः स्याम। यजुर्वेद 20•51

हम महापराक्रमी हों।

We should be the most valiant. May we be the possessors of heroic vigour.

128. स्वे क्षेत्रे अनमीवा विराज। अथर्ववेद 11•1•22
अपने घर में नीरोग होकर सुखपूर्वक निवास कर।
Live in splendour in your home with the glory of your health, free from disease.

129. अग्ने वर्चस्विनं कृणु। अथर्ववेद 3•22•3
हे ज्ञानस्वरूप प्रभो। मुझे वर्चस्वी बनाइये।
O Lord! The imbodiment of Knowledge, Make me luminous and full of splendour.

130. परोऽपेहि मनस्पाप। अर्थवेद 6•45•1
हे मन के पाप! तू मुझसे दूर हो जा।
O the vice in my mind! Leave me and go far away.

131. परा दुःष्वप्न्यं सुव। ऋग्वेद 5•82•4
कुविचारों को त्याग दो।
Drive away evil thoughts.

132. प्र जिगात बाहुभिः। ऋग्वेद 1•85•6
हे मनुष्यो! अपनी भुजाओं के बल से आगे बढ़ो।
O men! Advance with the strength of your arms.

133. उग्रा वः सन्तु बाहवः। सामवेद 1862
हे मनुष्यो! तुम्हारी भुजायें बलशाली हों।
O men! Your arms should be powerful.

134. अश्मा भवतु नस्तनूः। यजुर्वेद 29•49
हमारा शरीर पत्थर के समान दृढ़ हो।
Our bodies should be strong and hard like a rock.

135. खुदत वाजसातये। अथर्ववेद 20•137•2
बल प्राप्ति के लिए व्यायाम करो।
For gaining strength take regular exercise.

136. इदं वपुर्निवचनम्। ऋग्वेद 5•47•5
यह शरीर प्रशंसा के योग्य है।

This body is most praise-worthy.

सत्य = Truth

137. सुगा ऋतस्य पन्थाः। ऋग्वेद 8•31•13
सत्य का मार्ग सरल होता है।
It is easy to tread on the path of truth.

138. ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुः। ऋग्वेद 9•73•8
उत्तम कर्म करने वाले, यज्ञ करने वाले और सत्य के रक्षक को दबाया नहीं जा सकता।
A man of right conduct, doer of good deeds, performer of yanjana [Hawan] and protector of truth can never be suppressed.

139. सा मा सत्योक्तिः परिपातु। ऋग्वेद 10•37•2
सत्य सब प्रकार से मेरी रक्षा करे।
Truthfulness should protect me everywhere and in all manners.

140. सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्। ऋग्वेद 9•73•1
सदाचारी को सत्य की नौका पार लगाती है।
The boat of truth takes, the persons of good conduct, across the waters of the world.

श्रद्धा = Venration

141. श्रद्धया सत्यमाप्यते। यजुर्वेद 19•30
सत्य स्वरूप ईश्वर श्रद्धा से प्राप्त किया जाता है।
God, who is the embodiment of truth, is attained by faith.

142. श्रद्धया विन्दते वसु। ऋग्वेद 10•151•4
श्रद्धा से धन प्राप्त होता है।
Wealth is acquired by reverence God

निर्भयता = **Fearlessness**

143. मा भेर्मा संविक्थाः। यजुर्वेद 1•23
हे मानव तू विपत्ति के समय न तो भयभीत हो और न कम्पायमान् हो।
Never be fearful nor tremble in adversity.
144. मे प्राण मा बिभेः। अथर्ववेद 2•15•1
हे मेरे प्राण! (आत्मा) भयभीत मत हो।
O my Saul! Do not be frightend, never be fearful.
145. मा बिभेर्न मरिष्यसि। अथर्ववेद 5•30•8
हे आत्मन्! डर मत तू मरेगा नहीं।
O Saul! Be not afraid, you will not die.
146. अभयं मित्रादभयममित्रात्। अथर्ववेद 19•15•6
हमें न तो मित्र से भय लगे और न शत्रु से।
We should not fear the friend, nor the foe.
147. मा भेम शवसस्पते। ऋग्वेद 1•11•2
हे सर्वशक्तिमान् प्रभो! हम किसी से भयभीत न हों।
Embodiment of strength o God! We should not be frightend of anyone
148. नो अभयं कृधि। सामदेव 274
हे प्रभो! हमें निर्भीक बना दीजिए।
O God! Make us fearless.

लक्ष्मी धन ऐश्वर्य = **Wealth**

149. नो वर्धया रयिम्। यजुर्वेद 3•14
हे प्रभो! हमारे ऐश्वर्य को बढ़ाओ।

O God! Make us prosperous

150. राया वयं सुमनसः स्याम। अथर्ववेद 14•2•36
धन–ऐश्वर्य पाकर हम उत्तम मन वाले रहें।

After acquiring wealth and prosperity our mind should remain of sublime thoughts.

151. यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्। ऋग्वेद 10•121•10
हे प्रभो! हम जिन कामनाओं से यज्ञ कर रहे हैं, वे कामनायें पूर्ण हों और हम धन सम्पत्तियों के स्वामी बने।

O God! Fulfil our desire of doing this yajna so that we may become the owner of enormous wealth.

152. मयि देवा द्रविणमायजन्ताम्। ऋग्वेद 10•128•3
हे प्रभो! सभी दिव्य शक्तियां मुझे धन प्रदान करें।

O God! May all the divine powers provide me wealth.

153. इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि। ऋग्वेद 2•21•6
हे परमेश्वर! हमें श्रेष्ठ धन दो।

O Sovereign God! Provide to us the precious wealth.

154. मूर्धा अहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम्। अथर्ववेद 16•3•1
मैं धनवानों और अपने बराबर वालों में शिरोमणि हो जाऊँ।

O God! May I, by your grace, become the superior most of all the rich and the like.

155. स्वस्ति राये मरुतो दधातन। ऋग्वेद 10•63•15
हे ईश्वर! हम कल्याणकारी धनों को प्राप्त करें।

O God! May we attain auspicious wealth and prosperity.

156. अप्रतीतो जयति सं धनानि। ऋग्वेद 4•50•9
पीछे न हटने वाला धनों को जीत लेता है।

One who does not step back, acquires prosperity.

157. अन्यमन्यमुपतिष्ठन्त रायः। ऋग्वेद 10•117•5

लक्ष्मी चंचल होती है। वह एक से दूसरे के पास जाती रहती हैं।

The riches change hands. The wealth keep moving from one man to another.

158. रमन्तां पुण्या लक्ष्मीः। अथर्ववेद 7•115•4

हम पवित्र कमाई में रमण करें।

We should rejoice in honest and pure earnings.

159. याः पापीस्ता अनीनशम्। अथर्ववेद 7•115•4

जो पाप की कमाई है वह नष्ट हो जाती है।

The money which is earned by illegal and sinful means is soon lost.

160. स नो वसून्या भर। अथर्ववेद 6•63•4

हे प्रभो! हमें धन–ऐश्वर्य प्राप्त कराओ।

O God! Bestow upon us wealth and prosperity.

वाणी = **Speech**

161. मा निन्दत । ऋग्वेद 4•5•2

किसी की निन्दा मत करो।

Do not reproach anyone.

162. वद जिह्वयालपन्। अथर्ववेद 8•2•3

कम बोलो = व्यर्थ बकवास मत करो।

Talk little.

163. उग्रं वचो अपावधीः। सामवेद 353

हे मनुष्यो! कठोर वचन त्याग दो।

O men! Give up harsh words. Speak sweetly and politely.

164. जिह्वाया अग्रे मधु मे। अथर्ववेद 1•34•2

मेरी जिह्वा (जीभ) के अग्र भाग पर माधुर्य हो।

There should always be sweetness on the tip of my tongue.

165. वाचा वदामि मधुमत्। अथर्ववेद 1•34•3

मैं वाणी से सदा मधुर वचन बोलूँ।

My voice should always utter sweet words.

166. यद् वदामि मधुमत्तद् वदामि। अथर्ववेद 12•1•58

मैं जो कुछ बोलू मधुर ही बोलूं।

Whatever I speak should be sweet.

167. न दुरुक्ताय स्पृहयेत्। ऋग्वेद 1•41•9

कुभाषी के प्रति स्नेह न रखों।

Do not love the man who is a foul speaker.

168. वाग्यज्ञेन कल्पताम्। यजुर्वेद 18•29

हे मानव! अपनी वाणी को सत्कर्मों द्वारा समर्थ बना।

O men! Make your voice thrive by good deeds.

169. पयस्वान् मामकं वचः। अथर्ववेद 3•24•1

मेरी वाणी दूध जैसी मधुर हो।

My utterance should be tasteful like milk.

170. भर्गस्वतीं वाचमावदानि। अथर्ववेद 6•69•2

मैं तेजोमयी वाणी बोलूँ।

My speech should be clear and vigorous.

दुर्गुण त्याग = Rejection of evils

171. अक्षैर्मा दीव्यः। ऋग्वेद 10•34•13

जुआ मत खेलो।

Do not gamble.

172. विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्। ऋग्वेद 4•1•4

हे परमेश्वर। हमारी सब द्वेष भावनाओं को दूर कर दो।

O God! All feeling of hatred or ill-will remove completely from us.

173. विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यजुर्वेद 30•3
सकल जगत् के उत्पादक प्रभो! हमारे सब दुर्गण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए।

O God! The creator of the entire universe! Take away from us all the evil traits, bad habits and miseries.

174. युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः । यजुर्वेद 40•16
हे प्रभो! कुटिल आचरण एवं पाप कर्मों को हमसे दूर कर दीजिए।

O Lord! Take away from us the crooked and sinful deeds.

175. छिद्रं पृण। यजुर्वेद 12•54
हे साधक! अपने दुर्गणों को दूर करो।

O aspirant! Get rid of your shortcomings.

176. मा नो मर्ता अभिद्रुहन्। ऋग्वेद 1•5•10
मनुष्य परस्पर द्वेष न करें।

Humans should not hate each other.

177. मा स्रेधत। ऋग्वेद 7•32•9
मन, वचन और कर्म से किसी के प्रति हिंसा मत करो।

Never injure anyone in thought, word and deed.

178. ईर्मैव ते न्यविशन्त केपयः। अथर्ववेद 20•94•6
दुराचारी ऋण में डूबे रहते हैं।

The wicked pass their life in misery under the intolerable burden of indebtedness.

पप = Sin

179. केवलाघो भवति केवलादी। ऋग्वेद 10•117•6
अकेला खाने वाला पापी होता है।

One who eats alone is a sinner.

180. अघमस्त्वघकृते। अथर्ववेद 10•1•5

पाप करने वाले को पाप और दुःख ही मिलता है।

A sinner gets sin and misery.

181. अग्निर्न : पातु दुरितादवद्यात्। यजुर्वेद 4•15

हे प्रकाश स्वरूप प्रभो! आप हमें बुराई और निन्दा से बचाओ।

O Effulgent God! Protect us from evil-doings and slander.

182. अग्ने रक्षा णो अंहसः। सामवेद 24

हे ज्ञान स्वरूप परमेश्वर! आप पाप से हमारी रक्षा करो।

O God, the embodiment of knowledge! Protect us from sins and evil deeds.

183. विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्। अथर्ववेद 2•6•5

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो! आप हमें सब प्रकार के पाप आचरण से दूर कर दो।

O God, the embodiment of knowledge! Kindly lead us away from all evil and sinful deeds.

प्रेरणा = Mativation

184. उत्क्रमातः पुरुष माव पत्था :। अथर्ववेद 8•1•4

हे पौरुष सम्पन्न! अपनी वर्तमान स्थिति से ऊपर उठ नीचे मत गिर।

O the embodiment of power and strength! keep going upward, from your present position, never fall down.

185. उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। अथर्ववेद 8•1•6

हे पुरुष! तेरा उत्थान हो, पतन नहीं।

O the mighty man! You should go upward, not downward.

186. आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम्। अथर्ववेद 5•30•7

ऊपर उठना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीवधारी का लक्ष्य है।

Going upward, marching forward is the aim of every living human being.

187. आ रोह तमसो ज्योतिः। अथर्ववेद 8•1•8

हे मनुष्य! तू अन्धकार से प्रकाश की ओर कदम बढ़ा।

O man! March forward from darkness towards light.

188. कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। ऋग्वेद 9•63•5

संसार को श्रेष्ठ बनाओ।

Make the world Arya = noble.

189. आर्या ज्योतिरग्राः। ऋग्वेद 7•33•7

श्रेष्ठ मनुष्य प्रकाश का अनुसरण करते हैं।

Aryas = noble men follow the path of light.

190. मात्र तिष्ठ पराङ्मना। अथर्ववेद 8•1•9

इस संसार में उदास होकर मत बैठो, उत्साही, आशावान् और महत्वाकांक्षी बनो।

Do not live in this world with a spirit of dejection, sick heart. Be hopeful, ambitious and enthusiastic.

191. दुर्गाँ अति याहि शीभम्। अथर्ववेद 13•2•5

कठिनाइयों को शीघ्र पार करो।

Cross the obstacles and difficulties speedily

192. आरोह वय उन्मृजानः। अथर्ववेद 18•3•73

हे मानव! अपने जीवन को पवित्र बनाता हुआ ऊपर उठ।

O man! Purifying your life, go higher and higher.

193. दिवमारुहत् तपसा तपस्वी। अथर्ववेद 13•2•25

तपस्वी तप से ऊपर उठता है और मोक्ष प्राप्त करता है।

An austerious man through austerity rises higher and higher and attains salvation.

194. तपसा युजा वि जहि शत्रून्। ऋग्वेद 10•83•3

तप से युक्त होकर सब शत्रुओं अर्थात् विघ्न बाधाओं और काम, क्रोध आदि पर विजय प्राप्त कर।

By means of austerity prevail upon all the obstacles and be victorious upon enemies like greed and passion.

मङ्गल कामना = Good Wishes

195. मेधामयासिषम्। यजुर्वेद 32•13

मैं उत्तम बुद्धि को प्राप्त करूँ।

May I attain superior intellect.

196. दैवीं धियं मनामहे। यजुर्वेद 4•11

हम दिव्य बुद्धियां मांगते हैं।

We pray for divine intelligence.

197. ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। यजुर्वेद 19•9

हे प्रभो! आप तेजस्वरूप हो मुझे तेज प्रदान करो।

O God! You are effulgent, make me effulgent.

198. ओ३म् बलमसि बलं मयि धेहि। यजुर्वेद19•9

हे प्रभो! आप बलशाली हो मुझे बल प्रदान करो।

O God! You are mighty, make me mighty.

199. ओ३म् ओजोऽस्योजो मयि धेहि। यजुर्वेद 19•9

हे प्रभो! आप ओज स्वरूप हो मुझे ओज प्रदान करो।

O God! You are vigorous, make me vigorous.

200. ओ३म् मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। यजुर्वेद 19•9

हे प्रभो! आप दीप्तिमान् हो मुझे भी दीप्तिमान् बनाओ।

O God! You are radiant, make me radiant.

201. ओ३म् सहोऽसि सहो मयि धेहि। यजुर्वेद 19•9

हे प्रभो! आप सहनशील हो मुझे भी सहनशील बनाओ।

O God! You are enduring, make me enduring.

202. भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः। यजुर्वेद 25•21
हे दिव्य गुणों से युक्त ईश्वर! हम कानों से कल्याणकारी वचन सुनें।
O God! You are equipped with divine powers. Let us hear with our ears what is auspicious.

203. भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा। यजुर्वेद 25•21
हे सृष्टि यज्ञ के रचयिता प्रभो! हम आंखों से कल्याण देखें।
O God! You are the originator of yajna in the form of creation. Let us see with our eyes what is auspicious.

204. मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु। यजुर्वेद 34•1
हे ईश्वर! आपकी कृपा से मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।
O God! By your grace my mind be full of noble and auspicious thoughts.

205. यद् भद्रं तन्न आ सुव। यजुर्वेद 30•3
हे सृष्टि रचयिता प्रभो! हमें कल्याणकारी गुण, कर्म और स्वभाव प्रदान कीजिए।
O God! The creator of the entire universe! Give us all the qualities, deeds, aptitudes and objects which are blissful and auspicious.

206. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्। यजुर्वेद 40•16
हे ज्ञानस्वरूप प्रभो! हमें धनैश्वर्य प्रदान करने वाले श्रेष्ठ मार्ग पर ले चलो।
O God, the embodiment of knowledge! Take us through the noble path so that we may attain prosperity.

207. जागृवांसः समिन्धते। ऋग्वेद 3•10•9
जागरूक उपासक अपने हृदय में ईश्वर का अनुभव करते है।
Vigilant worshippers alone realize God in the temple of their heart

शाश्वत नियम = Eternal law

208. कालो अश्वो वहति। अथर्ववेद 19•53•1

समय रूपी घोड़ा दौड़ रहा है।

Time is fleeting like a horse.

209. तव शरीरं पतयिष्णवर्वन्। यजुर्वेद 29•22

हे जीवात्मन्! तेरा शरीर नाशवान् है।

O Saul! Your body is perishable.

210. ऋतस्य पथ्या अनु। सामवेद 1577

प्रकृति के नियमों का पालन करो।

Abide by the rules of nature.